शासनमुक्त, शोषणहीन, वर्गविहीन, सामाजिक संरचना की सम्प्राप्ति हेतु ''गुरुकुल परिवेश'' में राष्ट्रीय और नैतिक मूल्यों को प्रोन्नत कर उच्च शिक्षा एवं शोध को अद्यतन बनाये रखना।

मिशन

1. स्वस्थ , संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिकों के सृजनार्थ स्वच्छ एवं शान्त परिसर का निर्माण।
2. मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा 'सर्वे भवन्तु सुखिन :.....'के सिद्धान्त को समाहित करना।
3. सर्वोत्कृष्ट की प्राप्ति हेतु स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के प्रोत्साहन द्वारा संघर्षशील व्यक्तित्व का विकास।
4. शिक्षार्थियों, शिक्षकों, हितधारकों में परस्पर संवाद एवं प्रतिपूर्ति द्वारा नीतिनिर्धारण एवं निर्णयप्रक्रिया में सबकी सहभागिता सुनिश्चित करना।
5. 'सशक्त महिला-सशक्त समाज' की अवधारणा को चरितार्थ करने के लिये महिला शिक्षार्थियों में आत्मविश्वास और आत्मबल के विकास हेतु उपयुक्त परिवेश का पोषण।
6. शिक्षकों, शिक्षार्थियों और सहयोगियों को ज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त हो रहे आधुनिक वैज्ञानिक संसाधनों, तकनीकों एवं उपकरणों के प्रयोग द्वारा अद्यतन एवं प्रासंगिक बनाये रखना।

उद्देश्य

(1) साधनहीन क्षेत्र के नवयुवकों विशेषतः नवयुवतियों में शैक्षिक चेतना का विकास कर अन्तर्निहित क्षमताओं के प्रस्फुटन द्वारा राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाना ।

(2) मूल्य आधारित शिक्षा द्वारा उदात्त मानवीय मूल्यों एवम् नैतिक चरित्र का विकास।

(3) देश की महान सांस्कृतिक विरासत में आस्था उत्पन्न कर राष्ट्र गौरव का भाव विकसित करना।

(4) कला एवं विज्ञान वर्ग की समस्त शाखाओं में शिक्षा और अन्वेषण के कार्य को प्रोत्साहित करना।

(5) धर्म एवं नीति को शिक्षा का अनिवार्य अंग अंगीकार कर युवा वर्ग में राष्ट्रीय चरित्र गठित करना।

विकास यात्रा

स्वतंत्रता आन्दोलन के **'स्वराज संकल्प'** के साथ ही स्वातंत्र्योत्तर भारत के पुनर्निमाण एवं विकास में क्षेत्रीय नवयुवकों की सकारात्मक भूमिका सुनिश्चित करने के उद्देश्य से श्रद्धेय संस्थापक जी ने 1918 में स्थानीय स्वतंत्रता आंदोलन के केन्द्र-बिन्दु रहे ''व्यायामशाला'' के समीप 1937 में गीता जयन्ती के अवसर पर श्री गीता साहित्य कुटीर सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना, गाँधी-गीता के आदर्शों के व्यापक प्रचार, अध्ययन, अनुशीलन, अध्यवसाय की अभिवृत्ति विकसित कर स्वातंत्र्य आन्दोलन को रचनात्मक दिशा प्रदान करने एवम् सद्यः स्वतंत्र राष्ट्र की आवश्यकताओं-अपेक्षाओं के अनुरुप व्यक्तित्व विकसित कर राष्ट्रोपयोगी नागरिकों के निर्माण के पुनीत लक्ष्य से की। भारतीय पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रीय परिदृश्य में नारी की केन्द्रीय भूमिका और तत्कालीन परिवेश में नारी की उपेक्षा से आहत संस्थापक जी 1939 में बालिका विद्यालय की स्थापना हेतु विवश हुए जो आज भी परिषदीय विद्यालय के रुप में अपना योगदान सुनिश्चित कर रहा है। स्वतंत्रता आदोलन में अल्पवयस् (विद्यार्थी जीवन) से ही संलिप्तता से उच्च शिक्षा से वंचित संस्थापक जी ने 1946 में 'हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल' की स्थापना की जो कालान्तर में उच्चीकृत हो 1953 में कुटीर उच्चतर माध्यामिक विद्यालय एवम् 1956 में कुटीर इण्टर मीडिएट कालेज के वर्तमान स्वरुप को प्राप्त कर चुका है। नारी शिक्षा में परिषद् विद्यालय की सीमित भूमिका ने श्रद्धेय संस्थापक जी को 1962 में पुनः कुटीर बालिका विद्यालय की स्थापना हेतु बाध्य किया

जिससे नगरीय सुविधाओं से वंचित और आवागमन के साधनों के विकास से उपेक्षित सुदूर ग्राम्यांचल की बहू-बेटियाँ इण्टर मीडिएट तक की शिक्षा सरलता और सहजता से निर्विघ्न प्राप्त कर सकें।

ग्रामीण युवाओं में उच्च शिक्षा के अध्ययन-अनुशीलन-अनुसंधान से वैज्ञानिक चेतना जागृत करने के उद्देश्य से 1971 में संस्थापक जी ने विज्ञान संकाय की शिक्षा व्यवस्था से सम्पन्न कुटीर महाविद्यालय की स्थापना की जो आवश्यकता और विकास क्रम में 1982 से कला संकाय 1993 से स्नातकोत्तर कक्षाओं, 1996 से औद्योगिक रसायन, 2003 से जैव प्रौद्यौगिकी तथा 2007 से बी.एड कक्षाओं के संचालन के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर हो संस्थापक जी के 'शिक्षित राष्ट्र, समृद्ध राष्ट्र', की अवधारणा को मूर्त रुप प्रदान करने के प्रति कृत संकल्पित है। महाविद्यालय में लगभग 70 प्रतिशत छात्राओं की भागीदारी नारी शिक्षा द्वारा स्वस्थ समाज, समुन्नत राष्ट्र की परिकल्पना के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

कुटीर पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

नगरीय सुविधाओं से वंचित, ऐसा स्नातकोत्तर महाविद्यालय है जो आधुनिक जनजीवन के अभिशाप-भौतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक प्रदूषण- से मुक्त मूल्य आधारित नैतिक शिक्षा व्यवस्था द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के युवावर्ग विशेषत : युवतियों के समग्र-व्यक्तित्व विकास के प्रति समर्पित है। कालेज अपने सीमित संसाधनो में भी कला संकाय और विज्ञान संकाय के परम्परागत विभिन्न विषयों के साथ ही जैवप्रौद्योगिकी, औद्योगिक रसायन जैसे आधुनिकतम व्यवसायिक विषयों एवं शिक्षण प्रशिक्षण संकाय में स्नातक स्तरीय तथा रसायन विज्ञान, प्राणिविज्ञान एवं औद्योगिक रसायन में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा व्यवस्था से सम्पन्न है।मानक के अनुरुप व्याख्यान कक्ष, उच्च स्तरीय समुन्नत प्रयोगशालायें, जेनरेटर आच्छादित निर्बाध विद्युत आपूर्ति, वाई-फाई कैम्पस, आई सी टी लैब, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स एवं कम्प्यूटर शिक्षण की अतिरिक्त सुविधा. पावर प्वाईंट द्वारा शिक्षण, विषय विशेषज्ञों का नियमित व्याख्यान, विविध विषयों में शोध सुविधा, प्रचुर सहशैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर कार्यक्रम का नियमित आयोजन इस संस्था को विशिष्ट स्वरुप प्रदान करता है। संस्था में कार्यरत लगभग सभी शिक्षक शोध उपाधि प्राप्त एवं विषय में निष्णात हैं। संस्था में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से कई दशकों से शोध परियोजनायें संचालित है। संस्थापन लक्ष्यों के अनुरुप अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछडे वर्ग विशेषत : छात्राओं को संस्था द्वारा प्राथमिकता दी जाती है, जिससे समाज के वंचित और उपेक्षित वर्ग का राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा में योगदान सुनिश्चित होता है। पुरा छात्र परिषद्, शिक्षक-अभिभावक परिषद्, कैरियर काऊसिंलिंग सेल की सक्रियता के साथ ही समाज के बुद्धिजीवियों, समाज सेवियों, चिन्तकों, विचारकों, दार्शनिकों, उद्योगपतियों से, छात्रों और प्राध्यापकों के प्रत्यक्ष संवाद का अवसर उपलब्ध करा कर उनमें सामाजिक सरोकार विकसित किया जाता है। अबाध कक्षा संचालन, नकल विहीन परीक्षा, संस्था में प्रत्येक स्तर पर छात्रों की सहभागिता से छात्रों को भावी जीवन की चुनौतियों का व्यापक अनुभव दिया जाता है। महाविद्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 56 पर जौनपुर वाराणसी के मध्य अवस्थित जलालपुर चौमुहानी एवं जलालगंज रेलवे स्टेशन से 9 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है।

पाठ्यक्रम

1. भाषा संकाय

विषय - हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी

2. कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

विषय - भूगोल, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, शारीरिक शिक्षा (स्ववित्तपोषित) एवं गृह विज्ञान (स्ववित्तपोषित)

अर्हता - छात्र/छात्रा इण्टरमीडिएट/समकक्ष (10+2) की परीक्षा उत्तीर्ण हो।

अवधि - त्रिवर्षीय (छः सेमेस्टर) निधारित स्थान - 427

3- विज्ञान संकाय

विषय - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, **(स्ववित्तपोषित)** औद्योगिक रसायन, **(स्ववित्तपोषित)**

अर्हता - छात्र/छात्रा इण्टरमीडिएट (10+2) विज्ञान वर्ग की परीक्षा उत्तीर्ण हो

अवधि - त्रिवर्षीय (6 समेस्टर) (निर्धारित सीट- 300)

4- वाणिज्य संकाय (स्ववित्तपोषित)

विषय - वाणिज्य, लेखा एवं लेखा परीक्षण, विज्ञापन, विक्रय प्रोत्साहन एवं बिक्री प्रबंधन, बैंकिंग एवं बीमा, विदेशी व्यापार, कार्यालय प्रबंधन, सचिवीय सहायता तथा कराधान

अर्हता - छात्र/छात्रा इण्टरमीडिएट (10+2) वाणिज्य/विज्ञान (गणित समूह) की परीक्षा उत्तीर्ण हो। इण्टरमीडिएट कला वर्ग से उत्तीर्ण ऐसे छात्र जो अर्थशास्त्र/गणित विषय के साथ परीक्षा (10+2) उत्तीर्ण की है, वे भी वाणिज्य संकाय में प्रवेश के लिए अर्ह होगे

अवधि - त्रिवर्षीय (6 समेस्टर) (निर्धारित सीट-260)

5. स्नातकोत्तर (स्ववित्तपोषित)

अ. कला संकाय - विषय- हिन्दी, संस्कृत एवं भूगोल **अर्हता** - सम्बद्ध विषय में स्नातक

(निर्धारित सीट हिन्दी -60, संस्कृत - 60, भूगोल - 30) द्विवर्षीय (4 सेमेस्टर)

ब. विज्ञान संकाय - एम.एस.सी. रसायन विज्ञान, प्राणिविज्ञान एवं औद्योगिक रसायन

अर्हता - सम्बद्ध विषय में स्नातक **अवधि** - द्विवर्षीय (4 सेमेस्टर)

(निर्धारित सीट - रसायन विज्ञान - 30, प्राणि विज्ञान - 20 औद्योगिक रसायन - 25)

6. शिक्षक शिक्षा संकाय (बी.एड)

अर्हता - राज्य स्तरीय संयुक्त प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण एवं काउंसलिंग द्वारा चयनित छात्र/छात्राए

अवधि - द्विवर्षीय निर्धारित सीट - 50

विषय समूहन - राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के संदर्भ में विद्यार्थी को अपने संकाय का चुनाव करने के पश्चात संकाय और उसके अधीन आने वाले विषयों की सूची से न्यूनतम 2 विषयों का चयन करना अनिवार्य होगा। तीसरा मुख्य विषय वह अपने या दूसरे संकाय से ले सकता है।

माइनर/इलेक्टिव विषय का चयन - उपरोक्त के पश्चात विद्यार्थी को प्रथम चार सेमेस्टर (प्रथम दो वर्ष) हेतु एक माइयर/इलेक्टिव विषय किसी दूसरे संकाय से लेना अनिवार्य होगा, जो की किसी भी विषय का एक मुख्य प्रश्न पत्र होगा। इस प्रकार मुख्य विषय तथा माइनर/इलेक्टिव पेपर का चयन छात्र द्वारा ऐसे किया जायेगा की इनमें से कम से कम एक विषय अनिवार्यतः अपने संकाय के अतिरिक्त अन्य संकाय से हो।

उपरोक्त के अतिरिक्त सह-विषय/कोर्स एवं कौशल विकास प्रशिक्षण से सम्बन्धित कोर्स का अध्ययन करना होगा।जिसका निर्धारण महाविद्यालय स्तर से किया जायेगा।

5. रिक्त पद ..... - .....
6. डॉ. एन.पी. मिश्र - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
7. डॉ. संजय कुमार यादव - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
8. श्री संजय कुमार मिश्र - प्रवक्ता (अंशकालिक)
9. रिक्त पद ..... - .....
10. रिक्त पद ..... - .....
11. रिक्त पद ..... - .....

गणित

1. श्री अभिषेक वर्मा - प्रभारी, असिस्टेंट प्रोफेसर
2. श्री शैलेन्द्र कुमार - असिस्टेंट प्रोफेसर

भौतिक विज्ञान

1. श्री दुर्गा प्रसाद तिवारी - प्रभारी, असिस्टेंट प्रोफेसर
2. श्री प्रेम चन्द्र भारती - असिस्टेंट प्रोफेसर

प्राणी विज्ञान

1. श्री रविकाश मौर्य - प्रभारी, असिस्टेंट प्रोफेसर
2. श्री शैलेन्द्र चौधरी - असिस्टेंट प्रोफेसर
3. श्री वाचस्पति त्रिपाठी - असिस्टेंट प्रोफेसर
4. कुमारी शीला यादव - प्रवक्ता (अंशकालिक)
5. कुमारी पूजा मिश्रा - प्रवक्ता (अंशकालिक)
6. श्री राजकुमार यादव - प्रवक्ता (अंशकालिक)

औद्योगिक रसायन

1. डॉ. विनय कुमार पाठक - प्रभारी असिस्टेंट प्रोफेसर
2. श्री अभिषेक कुमार सिंह - अनुमोदित असिस्टेंट प्रोफेसर
3. सुश्री अनुश्री - प्रवक्ता (अंशकालिक)
4. राहुल मिश्रा - प्रवक्ता (अंशकालिक)

गृह विज्ञान

1. डॉ. पूर्णिमा चतुर्वेदी - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. श्रीमती रागिनी दूबे - प्रवक्ता(अंशकालिक)

जैव प्रौद्योगिकी

1. डॉ.श्री निवास तिवारी - प्रभारी, असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. कुमारी अनामिका शुक्ला - प्रवक्ता (अंशकालिक)

शिक्षा संकाय

1. डॉ. चन्द्रभूषण पाठक, - प्रभारी, असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
2. डॉ. सुरेन्द्र कुमार दुबे, - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
3. डॉ. नीता तिवारी - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
4. डॉ. रामेश्वर नाथ मिश्र - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
5. डॉ. योगेश पाठक - असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित)
6. श्री सतीश गुप्त असिस्टेंट प्रोफेसर
7. रिक्त पद ..... - .....

कार्यालय

1. श्री लालमणि भारती - कार्यालय प्रभारी
2. श्री लाल पद्माकर दुबे - आशुलिपिक
3. श्री उदयराज यादव - कार्यालय सहायक
4. श्री प्रवीण कुमार चतुर्वेदी - कार्यालय सहायक
5. रिक्त पद ..... - .....
6. श्री श्याम मिलन यादव - परिचर
7. श्री मातिबररिक्त पद ..... - परिचर - .....
8. रिक्त पद ....
9. रिक्त पद ....

पुस्तकालय

1. श्री विद्यानिवास मिश्र - पुस्तकालयाध्यक्ष